***जय जय भैरवि असुर भयाउनि-विद्यापति--बी०ए०पार्ट-२ हिंदी रचना**

डॉ०मनोज कुमार सिंह,सह-आचार्य, हिंदी विभाग, राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान।

जय जय भैरवि असुर भयाउनि

पशुपति भामिनि माया ।

सहज सुमति बर दिय हे गोसाउनि

अनुगति गति तुअ पाया ।।

बासर रैनि सवासन शोभित

चरण चन्द्रमणि चूडा ।

कतओक दैत्य मारि मुँह मेललि

कतओ उगिलि करु कूडा ।।

सामर वरण नयन अनुरंजित

जलद जोग फुलकोका ।

कट-कट विकट ओठ पुट पाँडरि

लिधुर फेल उठ फोका ।।

घन-घन-घनन घुघुरु कत बाजए

घन-घन-घनन घुघुरु कत बाजए

हन-हन कर तुअ काता ।

विद्यापति कवि तुअ पद सेवक

पुत्र विसरु जनु माता ।

सहज सुमति बर दिय हे गोसाउनि

अनुगति गति तुअ पाया ।।

संदर्भ:-प्रस्तुत पद आदिकाल के प्रसिद्ध कवि मैथिल कोकिल विद्यापति द्वारा रचित है । इस पद में कवि ने शक्ति की आराधना की है ।

भावार्थ:- हे ! असुरों और आसुरी वृत्ति को भय प्रदान करने वाली माँ भैरवी ! काली ! तुम्हारी जय जयकार हो । तुम्हारी जय हो क्योंकि जो कुछ भी हैं वो सब शिव-प्रिया शिवपत्नी की ही माया है,लीला हैं,कल्पना-सृष्टि है। हे गोसावनि ! आप मुझे ऐसी सहज , नैसर्गिक , स्वाभाविक सुन्दर चित्त , मन , बुद्धि का वर प्रदान करिये ताकि मुझे आपकी ही गति मिले अर्थात मैं आप में ही समाहित हो जाऊँ ।

घनघोर अन्धेरी रात्रि जो शवों से शोभित अर्थात भरी हुई हैं और आपका चरण सिर पर चन्द्रमाँ को मणि की तरह धारण करने वाले शिव यानी देवाधिदेव महादेव के ऊपर रखा हैं । कितने ही दैत्यों को आपने अपने मुख में एक साथ पान की तरह चबा डाला हैं और फिर कितनों को ही पान के पीक की तरह उगल दिया हैं जिनका ढेर लग गया हैं । साँवला बदन और लाल लाल आँखे ऐसी लग रही हैं,जैसे काले घने मेघ और सुबह के सूर्य का योग व मेल हो गया हो । आपके कटकटाते हुए दाँत होठों के मध्य चमेली के फूल की तरह श्वेत चमक रहे हैं और उसमें से रुधिर यानी खून झाग की तरह बाहर आ रहा है ।

मेघ गर्जना की तरह आपके घुँघरू बज रहे हैं और वायु के तेज प्रवाह की तरह आपकी तलवार चल रही हैं । ऐसे में माँ मैं बिद्यापति जो आपके चरणों का दास हूँ , सेवक हूँ , पुत्र हूँ ! हे माता आप मुझे मत भूल जाईएगा ।